

Approved by UGC , Journal No. 45314
IIJ Impact Factor : 2.013

ISSN 2395-4280
Letter No. : NSL/ISSN/INF/2015-850

Tripathagā

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Year-IV

Number-VII

January-June, 2018

Editor in Chief :
Dr. Ranjan Kumar Tripathi

Associate Editor :
Sudhanshu Chaubey

Approved by UGC, Journal No. 45314
Letter No. : NSL/ISSN/INF/2015/850

IIF Impact Factor : 2.013
ISSN - 2395-4280

TRIPATHAGĀ

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Year-IV

No-VII

January-June 2018

Editor in Chief

Dr. Ranjan Kumar Tripathi

Associate Professor
Department of Sanskrit
University of Delhi, Delhi
email : drrktripathi09@gmail.com

Associate Editor

Sudhanshu Chaubey

Research Scholar
Banaras Hindu University, Varanasi
Mob. : 9453036047
sudhanshu9026@gmail.com

Tripathagā
(An International Refereed Research Journal)
Year-IV, No.-VII, January-June 2018

All correspondence should be addressed to
The Editor
Tripathagā

COPYRIGHT © 2018 SUDHANSHU CHAUBEY
Faculty of SVDV, Banaras Hindu University,
Varanasi - 221 005, UP (INDIA)

Published by
South Asia Research & Development Institute
B. 28/70, Manas Mandir, Durgakund
Varanasi-221 005, U.P. (INDIA)

Printed by
Raj Graphics
BHU Road (Near SBI ATM), Lanka
Varanasi-221 005, U.P. (INDIA)
Mob. : 09415842611

परिवार और समाज की नयी अवधारणा बुनते स्त्रीवादी उपन्यास गीता यादव*

सामाजिक गतिविधियों को सुचारु एवं व्यवस्थित रूप से संचालित करने की दो महत्वपूर्ण कड़ी हैं— स्त्री और पुरुष। वस्तुतः स्त्री और पुरुष सामाजिक व्यवस्था के दो ऐसे महत्वपूर्ण अंग हैं जिन पर सामाजिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी टिकी रहती है। स्त्री और पुरुष समाज निर्माण के दो आवश्यक अंग हैं, जो एक दूसरे के पूरक हैं, तथा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। फिर प्रश्न यह उठता है कि सामाजिक व्यवस्था के इन दो महत्वपूर्ण अंगों में इतना भेदभाव क्यों किया गया? जहाँ सामाजिक व्यवस्था के संचालन में एक को खुली छूट दी जाती है तो दूसरे को अनेक प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, बन्धनों में जकड़ कर तमाम वर्जनाओं में बाँध दिया जाता है।

स्त्री विमर्श समकालीन अस्मितावादी विमर्शों में सबसे महत्वपूर्ण विमर्श है, जो शताब्दी के अन्तिम दशक में चर्चा का मुख्य केन्द्र बनकर साहित्यरूपी आकाश पर पूरी तरह छाया हुआ है। डॉ. क्षमाशंकर पाण्डेय लिखते हैं— "स्त्री विमर्श समकालीन अस्मितावादी विमर्शों में एक प्रमुख विमर्श है। सत्ता संघर्ष में प्रायः मूक और हाशिए पर कर दिये गये समाजों और समूहों में जब अपने बजूद, अपनी पहचान और अपनी अस्मिता की चेतना जाग्रत हुई और उन्होंने अपने दुःख, दर्द, आँसू, सपने को आकार देना शुरू किया तो उसने एक विमर्श का रूप धारण किया। इस अनसुने, अनपहचाने स्वर ने जब साहित्य में अपने को अभिव्यक्त करना शुरू किया तो वह एक खरे रूप में प्रस्तुत हुआ। अपने भोगे हुए यथार्थ को व्यक्त करते हुए इन समाजों ने अपने बारे में पूर्व में सहानुभूति पूर्वक लिखे गये साहित्य को अपने विमर्श का अंग नहीं माना। स्त्री विमर्श भी इसका अपवाद नहीं है। महिला लेखन में अपनी आशाओं, आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति पहले भी होती रही है, पर पश्चिम के नारीवादी आन्दोलनों के प्रभाव में समकालीन साहित्य में यह कुछ ज्यादा ही मुखर है।"¹

*शोधार्थी, एवं प्रो. चन्दा बेन, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)